इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि प्रत्येक छात्र अपने अध्यापकों का आकलन करता है। यह संभव है कि उनके आकलन के पैमाने शिक्षा के सिद्धांतों की कसौटी पर खरे न उतरें। अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम में छात्रों द्वारा शिक्षकों का आकलन इस लिहाज से भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि यह न केवल छात्र अध्यापकों को शिक्षण की प्रक्रिया पर पुनर्विचार के लिए एक उपकरण उपलब्ध कराता है वरन इस आकलन को शिक्षा के सिद्धांतों की कसौटी पर कसने का अवसर भी प्रदान करता है। यह लेख छात्र अध्यापकों द्वारा शिक्षकों के आकलन को लेकर छात्रों और शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं और चिंताओं से परिचित कराता है।

परीक्षक जब छात्र हो

अमित कुमार वर्मा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के शिक्षा संकाय में शोध छात्र हैं।

दुनिया भर में छात्रों द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन एक नवीन अवधारणा के रूप में प्रचलित हो रहा है, परन्तु भारत जैसे विकासशील देश में अभी भी इसकी स्वीकार्यता के प्रति तमाम खट्टे-मीठे अनुभवों से दो-चार होना पड़ता है। इस लेख में मैंने अपने शोध कार्य के सिलसिले में, संपर्क में आने वाले शिक्षकों के दृष्टिकोण पर आधारित ऐसे अनुभवों व विवरणों का जिक्र किया है जो छात्रों द्वारा बी.एड. (अध्यापक-शिक्षा) पाठ्यक्रम को पढ़ाने वाले शिक्षकों के मूल्यांकन के दौरान, शिक्षकों की ओर से प्रमुख रूप से नजर आए।

मेरे शोध कार्य के दौरान मैंने बी.एड. कक्षाओं में पढ़ाने वाले लगभग साठ शिक्षकों का उनके ही छात्रों द्वारा विभिन्न क्षमताओं पर मूल्यांकन करवाया। इस प्रक्रिया पर एक शिक्षिका ने अपनी प्रतिक्रिया कुछ यूं व्यक्त की, ''भला! छात्र कौन होते हैं, जो हम लोगों की शिक्षण-दक्षता का मूल्यांकन करें!'' उनकी नाराजगी को कम करने के लिए मैंने अपनी बात उनको समझाते हुए कहा, ''मैडम ऐसा नहीं है, बी.एड़. का छात्र इतना तो अपरिपक्व नहीं होता कि वह सही-गलत का उचित निर्णय न ले सके और वैसे भी आज डॉक्टर की परख उसके मरीज, वकील की परख उसके मुवक्किल तथा किसी भी उत्पाद की गुणवत्ता, विश्वसनीयता व पैठ की परख उसके उपभोक्ता करते

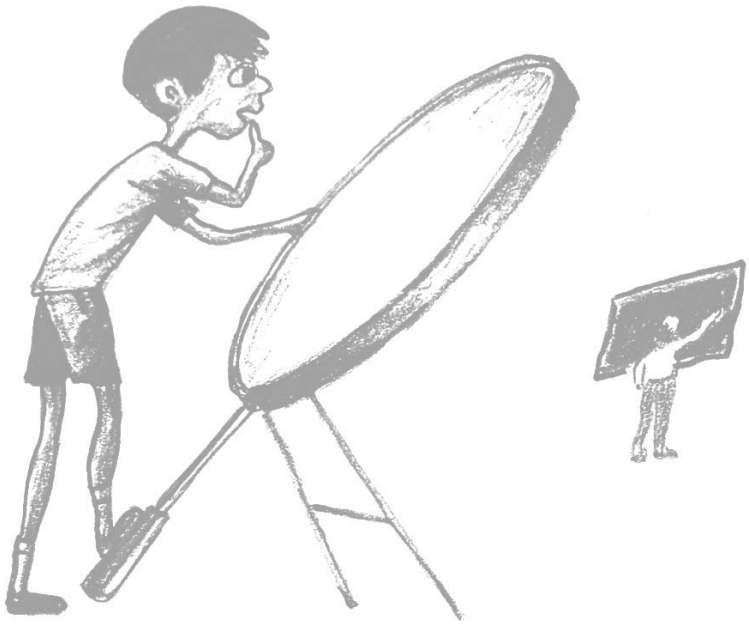

हैं तो क्या अध्यापकों की परख कुछ सीमा तक उसके छात्र नहीं कर सकते?'' इस प्रकार धैर्य के साथ अपनी बात समझाते हुए मैंने शिक्षकों के बारे में छात्रों की प्रतिक्रिया लेना शुरू किया।

अगले दौर में एक शिक्षक ने मेरे सम्मुख अचरज के साथ कुछ नए सवाल प्रस्तुत किए, ''जब-जब इस तरीके की बातें सामने आई हैं, मैंने अपने बीस वर्षों के शैक्षणिक अनुभव में तमाम वाद-प्रतिवाद ही देखे हैं। अब आपको अपना शोध कार्य करना है तो येन-केन प्रकारेण अपना कार्य पूरा कर शोध को अंजाम दो, लेकिन बहुत ज्यादा अपेक्षा मत करो।''

मैंने भी कुछ हद तक महसूस किया कि छात्रों द्वारा अध्यापक मूल्यांकन के सिलसिले में तमाम ऐसी बातें सामने आ जाती हैं जो छात्रों के प्रति शिक्षकों के रवैये में परिवर्तन ला देती हैं। सबसे बड़ा कारण शिक्षकों के द्वारा इसे गलत मानना ही प्रतीत हुआ। इस तरह के शोध की वैधता के प्रश्नों से इनकार नहीं किया जा सकता है, परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे बी.एड. के छात्र जो विभिन्न शाखाओं के स्नातक, परा-स्नातक और तमाम उच्च डिग्रीधारी छात्र होते हैं, वहां छात्र शिक्षकों का मूल्यांकन कर सकें, इस बात पर कुछ तो विश्वास किया ही जा सकता है।

ऐसा नहीं कहा जा सकता कि शोध के दौरान सभी शिक्षकों का रवैया नकारात्मक ही रहा हो। कुछ शिक्षक बड़े सकारात्मक भाव से सहयोग देते हुए भी नजर आए और उनके मिलते-जुलते कथन प्रश्नात्मक शैली में कुछ यूं थे, ''मेरे बारे में आपके शोध के जो भी परिणाम आएं, मुझे जरूर बताना। अच्छी बात है! मैं भी जानूंगा/जानूंगी, आखिर मुझमें छात्रों के लिहाज से कौन-सी कमियां आज भी विद्यमान हैं और निश्चय ही मैं उनको दूर करने का प्रयास करूंगा/करूंगी।'' कुछ छात्र (शिक्षकों की उपस्थिति में) शिक्षकों की तिरछी आंखें या भाव-भंगिमा को देखकर प्रतिक्रिया-प्रारूप के कुछ विकल्पों को बदलते हुए भी नजर आए, परन्तु ऐसा कुछ ही शिक्षकों के संदर्भ में रहा।

एक छात्र ने तो यह भी पूछा, ''सर, इससे हमारे आन्तरिक मूल्यांकन या वार्षिक परीक्षा परिणाम पर कोई असर तो नहीं पड़ेगा।'' एक अन्य छात्र का अनुरोध था कि इससे संबंधित परिणाम अमुक शिक्षक को तो कभी भी न बताएं, वे बहुत जल्दी ही नाराज हो जाते हैं और हम छात्र-छात्राओं से उखड़ जाते हैं। मैंने उसे आश्वस्त किया कि सारा परिणाम गोपनीय ही रखा जाएगा, आप ईमानदारी के साथ उत्तर दीजिए।

एक शिक्षिका ने कहा, ''बेटा! ऐसे मूल्यांकन तो समय-समय पर सरकारी तौर पर और कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों द्वारा अवश्य ही कराए जाने चाहिएं। समय बहुत तेजी से बदल रहा है। विज्ञान व संचार तकनीकों में आ रही नवीनता हम सभी के लिए चुनौतियां प्रस्तुत कर रही है। मैं तो परंपरागत शिक्षण-विधियों से पढ़ाती आई हूं, पुराने समय की होने के कारण आज भी कई मायनों में रूढ़िवादी

व परंपरागत ही हूं। लेकिन मुझे विश्वास है कि बदलते दौर के इन छात्रों के लिए मैं कितना सटीक हूं, ऐसे मूल्यांकन जरूर कुछ नया लेकर आएंगे और हम सभी को बेहतर बनाएं। कोई भी पूर्ण नहीं है। हम बीते कल से आज और आने वाले कल में जरूर पूर्णता/श्रेष्ठता की ओर कदम बढ़ाते हुए अच्छे से बेहतर और श्रेष्ठतम बनने का प्रयास करेंगे।'' उनके भावुकता के साथ कहे गए उपर्युक्त वचन मेरे अन्तर्मन को छू गए और मैंने महसूस किया कि वास्तव में कुछ पुराने शिक्षक भी कितनी संजीदगी के साथ आज के समय और अपने विद्यार्थियों को साथ लेकर चलते हुए बेहतर कल का सपना संजोने की ललक रखते हैं।

एक विद्यार्थी, शोध छात्र और दो-तीन वर्षों के अपने अल्पकालिक शिक्षण अनुभव के आधार पर मैंने खुद यह महसूस किया है कि वास्तव में जब-जब 'शिक्षकों के मूल्यांकन की बात' उठी है तब-तब समस्त शिक्षकों में मिठास कम खटास ज्यादा नजर आई। शिक्षकों के मूल्यांकन हेतु छात्रों को ऐसे अधिकार नहीं होने चाहिएं, ऐसे भी आरोप लगाए गए, वहीं शोध की वैधता व विश्वसनीयता की सीमा पर भी कुछ प्रश्न चिह्न खड़े किए गए।

इस लेख में अपने इन अनुभवों को बांटते हुए मुझे ऐसा लगता है कि यह कुछ कथन, सिर्फ कथन मात्र न होकर शिक्षकों के दिलो-दिमाग से निकली वे आवाजें हैं, जो उनके दृष्टिकोण को व शिक्षा व्यवस्था की खामियों को व्यापक रूप से परिलक्षित करते हैं। शिक्षण का कार्य किसी भी स्तर पर करवाया जाए विद्यार्थी पर उसका असर लाजमी तौर पर होता है। मेरा मानना है कि इस तरह के मूल्यांकन से संभवतः शिक्षण को बेहतर बनाया जा सकता है लेकिन मेरे इस अनुभव से मेरे मन में कुछ सवाल उठते हैं जिनके जवाब अभी खोजे जाने हैं कि शिक्षकों के असुरक्षा बोध को कैसे कम किया जाए? क्योंकि इस तरह के मूल्यांकन अधिकांश शिक्षकों को असुरक्षा बोध से भर देते हैं। उन्हें लगता है कि उनके ज्ञान और कौशलों को चुनौती दी जा रही है। दूसरी तरफ विद्यार्थी किसी भी तरह की राय देने से इसलिए डरते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उनका भविष्य दांव पर है। एक सवाल यह भी है कि शिक्षा के मूल्यांकन की किसी समुचित व्यवस्था को बनाए बगैर क्या इस तरह के मूल्यांकन शिक्षण में बेहतरी को सुनिश्चित कर सकते हैं?

यदि बच्चों में आलोचनात्मक सोच विकसित करनी है तो उनको व्यस्त करिए, उनसे संवाद करिए, उनसे सवाल करिए, उन्हें सवाल करने दीजिए। इससे ज्यादा इसका कोई सूत्र नहीं हो सकता। संवाद बना रहना चाहिए। संवाद में उनको मजा आना चाहिए और शिक्षक भी मजा आना चाहिए।

मुझे लगता है कि इन सवालों के जबाव हमारे शिक्षा जगत के सभी शुभचिंतकों को, शैक्षणिक आयोगों, कमेटियों व बुद्धिजीवियों और शिक्षाविदों को खोजने होंगे, ताकि वैश्विक रूप से आकार लेती इस शिक्षा व्यवस्था के दो प्रमुख घटकों -- अध्यापक व छात्र -- के बीच उत्तम समन्वय स्थापित हो सके और इसके जरिए शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर किया जा सके। भारत जैसे देशों में भी शिक्षण की बेहतरी के लिए छात्रों द्वारा शिक्षकों के मूल्यांकन को मान्यता प्राप्त हो, इसके लिए सभी शिक्षकों के स्वस्थ व सकारात्मक दृष्टिकोण सहित सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। ◆